This question paper contains 4 printed pages.

B.Com./B.Sc. (Sem. - II)

Roll No. ..117792...........

AEC - HIN   020126   AEC-52T-104 A

B.Com./B.Sc. Three/Four Year (Semester - II)

EXAMINATION SESSION 2023 - 24 (Held in Jul. 2024)

(Ability Enhancement Course)

Paper : AEC - 52T - 104 A

सामान्य हिन्दी (साहित्य)

Time Allowed: Three Hours

Maximum Marks: 40

प्रश्नों के उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न–पत्र पर रोल नम्बर अवश्य लिखें। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्येक प्रश्न हेतु निर्धारित अंक उसके सामने अंकित है।

किसी भी परीक्षार्थी को पूरक उत्तर–पुस्तिका नही दी जाएगी। अतः परीक्षार्थियों को चाहिए कि वे मुख्य उत्तर–पुस्तिका में ही समस्त प्रश्नों के उत्तर सही ढंग से लिखें।

खण्ड – अ के अंतर्गत प्रश्न संख्या 1 अतिलघूत्तरी प्रश्न है, जिसमें सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से 12 प्रश्न पूछे जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न 1/2 अंक का होगा।

खण्ड – ब के अंतर्गत प्रश्न संख्या 2,3,4,5 सप्रसंग व्याख्या का है, जिसमें इकाई से एक अवतरण (एक पाठ से एक) कुल चार अवतरण आंतरिक विकल्प सहित व्याख्या हेतु पूछे जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न 3½ अंक का होगा।

खण्ड – स के अंतर्गत प्रश्न संख्या 6,7,8,9 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न है जिसमें इकाई से एक प्रश्न आंतरिक विकल्प सहित पूछा जाएगा। प्रत्येक प्रश्न 05 अंक का होगा।

खण्ड – अ

1. निम्नलिखित अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नों का सारगर्भित उत्तर दीजिए– 12x½=06

   क. 'ईदगाह' कहानी के लेखक कौन है?

   ख. नीलू ने पक्षियों की रखवाली एवं खरगोशों की रक्षा कैसे की?

   ग. 'करि–करि सैन बतावे' इस पंक्ति में माता यशोदा का कौन सा मनोभाव अभिव्यंजिल हुआ है?

   घ. मीरां की भक्ति किस प्रकार की मानी गई है?

   ङ. बादल राग कविता का मूल प्रतिपाद्य क्या है?

च. 'रुद्ध कोष है क्षुब्ध तोष' इसमें कवि का क्या आशय है?

छ. 'वह तोड़ती पत्थर' कविता का मूल भाव क्या है?

ज. 'अकाल और उसके बाद' कविता के रचयिता कौन है?

झ. 'साँप' कविता के कवि का नाम बताइए।

ञ. 'हिरोशिमा' कविता कवि की किस दृष्टि को उद्‌घाटित करती है?

ट. 'गुलाबी चूड़ियाँ' कविता का मुख्य मूलभाव क्या है?

ठ. 'अकाल और उसके बाद' कविता में कवि ने किस प्रान्त के अकाल का वर्णन किया है?

खण्ड – ब

2. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए– 3½x4=14

क. बुढ़िया का क्रोध तुरन्त स्नेह में बदल गया और स्नेह भी वह नही, जो प्रयत्न होता है और अपनी सारी कसक शब्दों में बिखेर देता है। वह मूक स्नेह था, खूब ठोस; रस और स्वाद से भरा हुआ। बच्चें में कितना त्याग, कितना सद्‌भाव और कितना विवेक है। दूसरों को खिलौने लेते और मिठाई खाते देखकर इसका मन कितना ललचाया होगा। इतना जब्त इसमें हुआ कैसे? वहाँ भी इसे बुढ़िया दादी की याद बनी रही। अमीना का मन गद्‌गद हो गया।

अथवा

राजा के अलावा किसमें इतनी बुद्धि है कि वह अन्धकार को मिटाने का उपाय सोच सके। नौ रत्नों का भी वैसा बूता कहाँ। कोई छोटा–मोटा काज सार ले तो सार लें। पर राजा तो राजा ही होता है पूरे राज्य का एकछत्र अधिपति, बुद्धि के बिना इतनी बड़ी रियासत एक घड़ी भी नही चल सकती शरीर की ताकत तो बुद्धि के पीछे चलती है। वरना शेर, सुअर, हाथी या भेड़िया ही मनुष्य का राजा होता।

3. क. अंग्रेज सात समुन्दर पार से आये थे और अपने समाज के अनुभव लेकर आए थे। वहाँ वर्गो पर टिका समाज था, जिसमें स्वामी और दास के संबंध थे। वहाँ राज्य ही फैसला करता था कि समाज का हित किसमें है। यहाँ जाति का समाज था और राजा जरूर थे पर राजा और प्रजा का संबंध अंगेजों के अपने अनुभवों से बिल्कुल भिन्न थे। यहाँ समाज अपना हित स्वयं तय करता था और उसे अपनी शक्ति से, संयोजन से पूरा करता था। राज्य उसमें सहायक होता था।

अथवा

कोई आदमी किसी मरते हुए आदमी के पास नही जाता, इस डर से कि वह कत्ल के मामले में फँसा दिया जाए। बेटा बीमार बाप की सेवा नही करता। वह डरता है, बाप मर गया तो उस पर कहीं हत्या का आरोप नही लगा दिया जाए। घर जलते है और कोई बुझाने नही जाता – डरता है कि कहीं उस पर आग लगाने का जुर्म कायम न कर दिया जाए। सारे मानवीय संबंध समाप्त हो रहे है। मातादीन जी ने हमारी आधी संस्कृति नष्ट कर दी है। अगर वे यहाँ रहे तो पूरी संस्कृति नष्ट कर देंगे। उन्हें फौरन रामराज में बुला लिया जाए।

4. सन्देसो देवकी सौं कहियो

हौं तो धाय तिहारे सुत की, कृपा करत ही रहियो।

उबटन तेल और तातो जल, देखत ही भजि जाते।।

जोइ सोइ मांगत सोइ सोइ देती, करम करम करि न्हाते।

तुम तौ टेव जानतिहिं ह्वै हौं, तऊ मोहि कहि आवै।।

अथवा

महा अजय संसार रिपु जीति सकइ सो वीर।

जाकें अस रथ होइ दृढ़ सुनहु सखा मतिधीर।।

सुनि प्रभु वचन विभीषण हरषि गहे पद कंज।

एहि मिस मोहि उपदेसेहु राम कृपा सुख पुंज।।

उत पचार दसकंधर इत अंगद हनुमान।

लरत निसाचर भालु कपि करि निज निज प्रभु आन।।

5. चढ़ रही थी धूप

गर्मियों के दिन

दिवा का तमतमाता रूप

उठी झुलसाती हुई लू

रूई ज्यों जलती हुई भू,

गर्द चिनगीं छा गई,

प्रातः हुई दुपहर

वह तोड़ती पत्थर

अथवा

साँप !

तुम सभ्य तो हुए नही–

नगर में बसना भी तुम्हें नही आया।

एक बात पूछूँ–

उत्तर दोगे ?

तब कैसे सीखा डँसना–

विष कहाँ पाया ?

खण्ड – स

दीर्घ प्रश्न :–

6. मुंशी प्रेमचंद द्वारा लिखित 'ईदगाह' कहानी की समीक्षा कीजिए। 05

अथवा

'उजाले के मुसाहिब' कहानी का सार लिखते हुए इसमें निहित संदेश को स्पष्ट कीजिए। 05

7. इंस्पेक्टर मातादीन चाँद पर' पाठ के आधार पर बताइए कि इसमें पुलिस व्यवस्था पर करारा व्यंग्य किया गया है। 05

अथवा

रामधारी सिंह 'दिनकर' के अनुसार 'डॉक्टर राधाकृष्णन' के व्यक्तित्व की विशेषताओं को उजागर कीजिए। 05

8. 'कबीर कवि ही नही समाज सुधारक भी थे' इस कथन को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। 05

अथवा

मीरां की भक्ति–भावना पर प्रकाश डालिए। 05

9. मैथिलीशरण गुप्त की 'मनुष्यता' कविता का मूल संदेश अपने शब्दों में लिखिए। 05

अथवा

अज्ञेय की 'हिरोशिमा' कविता में निहित व्यंग्य एवं मूलभाव को स्पष्ट कीजिए। 05